
कन्दर्पी घाट
नाटक
17056
19.8.15
ले॰ राजेश्वर झा

कन्दर्पी घाट

नाटक

●

लेखक

राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना

●

प्रकाशक

अमरनाथ प्रकाशन

रसुआर (सहरसा)

संशोधित संस्करण

दाम : एक टाका



मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस
आर्यकुमार रोड, पटना–४

कन्दर्पी घाट



पं० लक्ष्मी कान्त झा

(भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश, पटना उच्च न्यायालय तथा

दरभंगा राजक वर्त्तमान एक्सेक्यूटर)

एक लघु उपहार

पटना उच्च न्यायालयक भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश एवं दरभंगा
राजक वर्तमान एक्सेक्यूटर जे यथार्थतः परस्पर
विरोधिनी शक्ति लक्ष्मीक कान्तिक संग सरस्वतीक
कान्तिहु कें धारण करैत छथि तथा मिथिलाक
गगन मध्य मार्तण्ड स्वरूप भासित होइत
छथि, जनिक प्रश्रय पाबि लेखक अपना
कें गौरवान्वित बुझैछ एहि पुरुष-
श्रेष्ठ पण्डित श्री लक्ष्मी कान्त
झा जीक कर कमल मे
सादर भेंट।

—लेखक

प्राक्कथन

मिथिलाक लोकक बाल्यकाल विद्याभ्यासक; युवावस्था गुरुक उपासनाक तथा वृद्धावस्था समस्त परिग्रहक त्यागक हेतु होइछ। एहि भूमिक कण-कण मे तप ओ त्यागक आदर्श तँ पाओले जाइछ मुदा एतऽ एहनो स्थान अछि जे मातृभूमि एवं आत्ममर्यादाक रक्षार्थ आत्मदानक हेतु मनुष्यमात्र कें प्रेरित करैछ।

मिथिलाक इतिहास मे कन्दर्पी घाटक एक विशिष्ट स्थान पाओल जाइछ जे तप ओ त्याग एवं शास्त्र ओ शास्त्रार्थक अपेक्षा आत्म बलिदान, पराक्रम ओ शस्त्रसंपातक प्रेरणा दैछ। वस्तुतः कन्दर्पी मिथिलाक हल्दी घाटी थिक जतए पारस्परिक ईर्ष्या एवं द्वेष प्रच्छन्न शत्रुता मे परिणत भए युद्ध रूप मे फूटि भीषण नरसंहार कएलक। हल्दी घाटी मे तँ धर्म ओ सत्यक विजय परोक्ष रूप मे भेल मुदा कन्दर्पी घाट मे प्रत्यक्ष रूप मे पाओल जाइछ।

जीवन-संघर्ष मे प्रत्येक व्यक्ति कें सुखपूर्वक आत्म-निर्वाहक योग्य बनाएब तथा जाति गौरव ओ समाजक परम्परा कें कायम राखब मिथिलाक संस्कृतिक महान उद्देश्य रहल अछि। "हिन्दू हिन्दू समान थिक" ई हिन्दू संस्कृतिक तथा "मनुष्य मनुष्य समान थिक" ई मानव संस्कृतिक मूल थिक जे जाति ओ धर्म सँ सर्वदा पृथक मानल जाइछ।

मुसलमानी काल मे हिन्दू पर कतेको प्रतिबन्ध छल तथा हिन्दू कें मुसलमानक अपेक्षा सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकार कम प्राप्त छलैक मुदा कतेको मुसलमान शासक विद्या प्रेमी भेलाह। फलस्वरूप ओ लोकनि विद्वान एवं विशिष्ट व्यक्ति कें सम्मानित कएलैन्ह। अतः धार्मिक कट्टरताक रहितहुँ

गयासुद्दीन तुगलक कामेश्वर ठाकुर के तथा मुगल बादशाह अकबर महेश ठाकुर के मिथिलाक राजा बनाओल।

अकबरक प्रादुर्भाव ओहि काल मे भेल जाहि मध्य जगतक प्रायः प्रत्येक सभ्य देश अपन जीवनक एक नव धड़कनक अनुभव करैत छल। इंगलैंडक ट्यूडर, फ्राँसक बूरबों, स्पेन ओ आस्ट्रियाक हैप्सवर्ग तथा चीनक मिंग्सक उत्थान एहि युग मे भेल जे धार्मिक कट्टरताक अपेक्षा धर्म सम्बन्धी उदार ओ व्यापक भावना के जन्म देल। अकबर भारतक धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक एकताक सफल प्रयास कएलैन्ह।

दरभंगा राजक संस्थापक महामहोपाध्याय महेश ठाकुर मध्यप्रदेशक खण्डवला गाँवक उपार्जक गोसाँई शंकर्षण उपाध्यायक वंशज छलाह। अतएव महेश ठाकुरक राजवंश खण्डवला राजवंश नामे प्रसिद्ध भेल।

सुन्दर ठाकुरक उत्तराधिकारी राजा महिनाथ ठाकुर खण्डवला राजवंश मे प्रमुख मानल जाइत छथि। राज्य प्राप्त कएलाक किछु दिनक उपरान्त मोरंग तथा पलामुक चेरो राजा प्रताप राय मुगल सम्राट औरंगजेबक विरुद्ध विद्रोह कएल। बिहारक तत्कालीन शासक दाउदक खाँ के एहि दुहु विद्रोह के दबेबाक आदेश भेटल जे राजा महिनाथ ठाकुरक सहयोग सँ सफल भेल। महिनाथ ठाकुरक पराक्रम एवं युद्ध कुशलता पर प्रसन्न भए औरंगजेब बिहार एवं बंगाल सुबा मे एकसएदश परगन्नाक जमींदारी देल तथा खिल्लत एवं महिमरतीवक उपाधि सँ हुनका विभूषित कएल जे साधारणतः राजा, प्रधान एवं मनसवदार लोकनि के ओहि समय भेटैत छलैक। एहि तरहक उपाधिधारी के निर्धारित करक अतिरिक्त सेनाक भार सेहो रहैत छलैक जकर उपयोग बादशाहक आदेशानुसार होइत छल तथा एहि सेवावृत्तिक हेतु प्रशासकीय विषय मे ओ लोकनि बहुत हद तक स्वतंत्र रहैत छलाह।

महिनाथ ठाकुरक उपरान्त नरपति ठाकुर तथा नरपति ठाकुरक उपरान्त राघव सिंह खण्डवला वंशक राज्य प्राप्त कएलैन्ह। सर्वप्रथम राजाक उपाधि

राघव सिंह केँ सन् १७२० ई० मध्य अलीवर्दी खाँक द्वारा प्राप्त भेल जे सिंह उपाधि केँ धारण कएल। राजा राघव सिंह अत्यन्त पराक्रमी छलाह। राजा राघव सिंहक पश्चात् विष्णु सिंह तथा विष्णु सिंहक पश्चात् राजा नरेन्द्र सिंह मिथिलाक राज्य प्राप्त कएल।

राजा नरेन्द्र सिंह धीर, वीर एवं स्वातन्त्र्य प्रिय छलाह। अलीवर्दी खाँ हुनकर पराक्रम एवं रण कुशलता पर मुग्ध भए खिल्लत एवं आन-आन सम्मान सँ हुनका सम्मानित कएल एवं राज्याधिकार मे सेहो वृद्धि कएल।

प्राय: देखल जाइछ जे स्वतंत्र एवं आत्मसम्मानी पुरुषक शत्रुओ होइछ। राजा नरेन्द्र सिंहक विरुद्ध हुनक शत्रु पटनाक उप शासक राजा रामनारायण केँ उकसायब प्रारम्भ कएल जे सन् १७५२ ई० मे अपन कार्यभार ग्रहण कएने छलाह। राजा रामनारायण ओहि समयक एक पैघ अर्थशास्त्री छलाह। नवाब अलीवर्दीक खजाना भरबाक हेतु ओ मालगुजारी तथा आन-आन करक व्यवस्था कएलैन्ह जाहि सँ दक्षिणी बिहारक छत्रधारी सिंह, पहलवान सिंह, उदवंत सिंह आदि पैघ-पैघ जमींदार लोकनि तँ रामनारायणक शोषण नीति सँ असंतुष्टे छलाह मिथिलाक राजा नरेन्द्र सिंह सेहो अपन अधिकारक हनन् बुझि रामनारायण केँ विरोध कएल जकर फलस्वरूप कन्दर्पी घाटक प्रसिद्ध युद्ध भेल।

राजा नरेन्द्र सिंहक राज्य-काल मे नवाब अलीवर्दीक एक विश्वस्त ओ बहादुर अफगान सरदार मुस्तफा खाँ जे दरभंगाक छलाह नवाबक विरुद्ध विद्रोह कएल। मुस्तफा खाँ अलीवर्दी केँ साम्राज्य बृद्धि मे बड़ मदति कएल। अत: अलीवर्दी मुस्तफा खाँ केँ पटनाक उपशासक पदक आशा देल जे रामनारायणक नियुक्तिक फलस्वरूप निराश भेल। मुस्तफा ९००० अफगान घोड़सवार ओ एक जत्था पैघ पैदल सेना लए राजमहल ओ मुंगेरक किला पर अधिकार कए पटना धरि बढ़ि आएल मुदा नवाबक फौज द्वारा हराओल गेल। अत: कन्दर्पी घाटक युद्ध मे नरहन आदिक जमींदार तँ राजा

नरेन्द्र सिंह कें मदति कएने छलैन्ह, मिथिलाक अफगानक हुनका सेहो पूर्ण सहयोग भेटलैन्ह ।

कन्दर्पी घाट पुराण-प्रसिद्ध बलान नदीक एक घाट थिक जे दरभंगा जिलाक मधुबनी प्रमंडलक झंझारपुर थानाक महरैल गामक अन्तर्गत अछि। युद्धक मैदान महरैल ओ हरिना गामक बीच मे छल जे आब बलान एवं कमला नदीक गर्भ मे प्रक्षिप्त भए गेल। स्वतः कमला जे ओहि समय महरैल सँ तीन कोस पर छलीह अद्यावधि वलानक धार मे बहि रहलीह अछि।

कन्दर्पी घाटक धर्म-युद्ध मे प्राणार्पण केनिहार ब्राह्मणक जनउ युद्ध समाप्त भेला पर स्मृति स्वरूप जे गाड़ल गेल ओ स्मृति रूप मे औखन एक ऊँच भीड़क रूप मे पाओल जाइछ। एहि विशिष्ट स्थान मे दरभंगाक महाराज रामेश्वर सिंह द्वारा निर्मित एक कालीक मन्दिर अछि जे शक्तिक प्रतीक तथा आत्मदानक स्मृति स्वरूप मिथिलाक सुप्त भावना कें जगबैछ।

कन्दर्पींक युद्ध महाअष्टमी कें भेल छल। युद्धक अवसर पर अलीवर्दी खाँ स्वतः मिथिला आएल छलाह तथा नरेन्द्र सिंहक पराक्रम एवं रण-कौशल देखि मुग्ध भेलाह जकर पुष्टि चन्दाझाक निम्नलिखित पद सँ होइछ—

"ऐसो महाघोर जोर जंग सुलतानी बीच झुकत ववर जंग शङ्कर करीन्द्र है।
औलिया नवाब पूछे बारबार ये दोनो कौन लड़त अरिवारण परीन्द्र है।
साहेव सुजान जैनुद्दीन अहमद खाँ सामने भय अर्ज करत कहत कवि चंद्र है।
ये तो द्रोनवार केशोसाह के अजीतशाह आगे राघोसिंहजी के नवल नरेन्द्र है।

औलिया नवाबक तात्पर्य नवाब अलीवर्दी सँ अछि। परम श्रद्धेय डा० जटाशङ्कर झा जी "हिस्ट्री आफ दरभंगा राज" नामक पुस्तक मे एहि प्रसंग मे पूर्ण उल्लेख कएने छथि। अतः एहि ठाम एहि विषयक हेतु विशेष प्रयोजन नहि बुझना जाइछ।

"कन्दर्पी घाट" क वर्णन मंगरौनी ग्रामवासी कवि लाल झा पदरूप मे कएने छथि जे महामना ग्रीयर्सन महोदय द्वारा सन् १८८५ ई० क 'दी एसियाटिक सोसाइटी जर्नल' नामक पत्रिका मे प्रकाशित अछि।

कन्दर्पी घाटक कथावस्तु के नाटकक रूप मे प्रस्तुत करबाक इच्छा यद्यपि बहुत दिन सँ छल मुदा कार्यरूप मे परिणत करबाक प्रेरणा नरेन्द्रपुर ग्रामवासी परमप्रिय श्री नरेन्द्र मिश्र सँ तथा प्रोत्साहन बिहार विद्यालय परीक्षा समितिक श्री सुहृदनारायण चौधरी सँ प्राप्त भेल। अतः एहि दुहु व्यक्तिक प्रति हम अपन कृतज्ञता ज्ञापन करैत छी।

"कन्दर्पी घाट" नाटक मे अधिकांश गीत महाकवि चन्दाझाक बनाओल एवं चन्द्रपद्यावली सँ उद्धृत अछि तथा कवि लाल झाक पद यथास्थान अपन स्वभाविक रूप मे राखल गेल अछि। एहि दुहु विशिष्ट विद्वानक प्रति हम अपन ऋण प्रकट करैत छी। परम प्रिय श्री नन्दकुमार झाजीक एहि मे सहयोगक हेतु हम चिर ऋणी छी जे कतेको ठाम भूल सुधारबाक कष्ट कएलैन्ह।

कन्दर्पी घाट नाटक मे जे दोष ओ त्रुटि पाओल जाए ताहि हेतु हम साहित्यकार लोकनि सँ क्षमा याचना करैत छी।

विद्यापति दिवस
२५ नवम्बर, १९६६ ई०

राजेश्वर झा
बिहार रिसर्च सोसाइटी

द्वितीय संस्करणक प्राक्कथन

'कन्दर्पी घाट' नाटकक द्वितीय संस्करणक प्राक्कथन लिखैत बड़ आनन्द भए रहल अछि जकर एकमात्र उद्देश्य मिथिलाक संतान केँ आत्म सम्मान एवं मातृभूमिक रक्षार्थ शोणित मे उष्णता, भाव मे उमंग तथा नस मे उत्साह लाएब थिक। तदर्थ यथा साध्य अशुद्धि केँ निवारण कए पुनि प्रकाशनक धृष्टता कए रहल छी। आशा अछि मिथिला एवं मैथिलीक विद्वद्गणक प्रोत्साहन सतत् भेटैत रहत।

—राजेश्वर झा

नाटकक प्रधान पात्र

पुरुष

नरेन्द्र सिंह	:	मिथिलाक राजा
गोकुल नाथ उपाध्याय	:	महामंत्री
जाफर खाँ	:	अफगान सरदार
हालाराय	:	एक नागरिक
मित्रजीत सिंह उमराऊ सिंह	}	नरेन्द्र सिंहक सरदार
सर्वज्ञान झा	:	राज्य ज्योतिषी
जैनुद्दीन	:	पटनाक शासक
राजा रामनारायण सुबा	:	पटनाक उप-शासक
भिखारी महथा	:	पटनाक फौजदार
सलावत राय	:	सेना नायक
अलीवर्दी खाँ	:	मुर्शिदाबादक नवाब

(अज्ञात व्यक्ति, नागरिक चरक, सिपाही आदि आन-आन पात्र)

स्त्री

महारानी	:	राजा नरेन्द्र सिंहक स्त्री

(नर्त्तकी, कञ्चुकी आदि आन-आन स्त्री पात्र)

प्रार्थना

जय-जय गणपति सुमति शिरोमणि
मनवांछित फल दाता।
सकल लोक सेवित पद पंकज
जय-जय सिद्धि विधाता॥
जय जय गजमुख जन सुखदायक
सिद्धि बिनायक नामा।
एक रदन त्रिभुवन जन सुभवन
प्रथम पूज्य सभठामा॥
जय जय आनन्दित गिरिजा मन
सकल शास्त्र विज्ञानी।
जय विश्वम्भर शिव मन सुखकर
जय शुभ सम्पति खानी॥
जय जय मिथिला अङ्गदेश प्रभु
विदित विश्व उपकारी।
जय जय "चन्द्र" चूड़ नन्दन विभु
जय जय करुणाधारी॥

(प्रस्थान)

पहिल अंक

दृश्य : एक

(भौरा गढ़, एक अज्ञात पुरुष गबैत छथि)

जय जय हे मिथिला महरानी ॥
जगत जननिक जननी अहाँ छी
जानत के नहि प्राणी ॥
विद्यापीठ गरिष्ठ त्रिलोक मे
भेलाह जतए जनक सन विज्ञानी ॥
याज्ञवल्क्य, गौतम, गंगेश, विद्यापति
प्रभृत अनेक ज्ञानी ॥
हरिसिंह, शिवसिंह, महेश, नरेन्द्र सन
नृपति जतए लखिमा सन रानी ॥
उत्तर, पश्चिम, दक्षिण, पूरब चहुँ
दिशि धरम ध्वजा फहरानी ॥
राम चरित अनुराग मुदित नित गुण
जनिक गबैछ महेश भवानी ॥

धन्य मिथिला ! धन्य एहि देशक लोक ! किओ वल्कल मात्र सँ प्रसन्न अछि तँ किओ लक्ष्मीक प्राप्ति सँ। सत्य, सहनशीलता, संयम, शान्ति, नियम, पवित्रता, धीरता, स्वाध्याय एवं तीव्र बुद्धि आदि गुण सँ युक्त, विद्या ओ तपक धनी, अभिमान रहित ब्राह्मण सँ परिपूर्ण मिथिला इन्द्रक अलका सन प्रतीत होइछ ।

युवत्व प्रयुक्त सौंदर्य सँ सम्पन्न, सोनाक हार, ताम्बूल ओ पुष्पाभरण सँ प्रसाधित रहितहुँ एहिठामक ललनाक रम्यता शील ओ सुशीलता मे पाओल जाइछ जे अन्यत्र दुर्लभ अछि ।

(एक व्यक्तिक प्रवेश)

व्यक्ति :—की अहाँ परदेशी छी ? कतऽ रहैत छी तथा कोन प्रयोजनें अएलहुँ अछि ?

अज्ञात पुरुष :—हम नवद्वीप सँ ज्ञान-जिज्ञासक हेतु एहि पुण्य भूमि मे अएलहुँ अछि। वासुदेव ओ रघुनाथ शिरोमणि जे अमूल्य ज्ञान एतऽ प्राप्त कएलैन्ह ताहि ज्ञानक लिप्सा अछि। धन्य एहि ज्ञानक जन्म भूमि मिथिला !

अर्कपत्रमपि यत्र दुर्लभं रन्धनं भवति नैन्धनं बिना।
श्री भगीरथ गुणेन केवलं भौर गौरवकथा गरीयसी ॥

व्यक्ति :—औ महाशय! ओहि समयक मिथिला किछु आन छल। आब एहिठामक विद्यालय मे वेदघोष एवं धर्मशास्त्र-चर्चाक अभाव पाओल जाइछ तथा लोक मध्य पुराण श्रवण तँ प्रायः बंद भए गेल।

एतबेक नहि मिथिलाक श्री-शोभा, नदीक स्रोत, पर्वतक आकार ओ नगरक रम्यता आदि मे सेहो पूर्ण परिवर्त्तन पाओल जाइछ।

अज्ञात व्यक्ति :—महाशय ! धर्मक पुरस्कार मात्र दुख होइछ मुदा एहि दुख मे जे सुख भेटैछ ताहि समक्ष सभ सुख ओ सम्पत्ति निरर्थक भए जाइछ।

मिथिलाक अमूल्य निधि मधु मे मिठास, मद्य मे मादकता एवं जल मध्य मीन सन प्रक्षिप्त पाओल जाइछ। सुन्दर स्वर मे साधल तन्त्रीक नाद जँ रंजक रागक रूप मे प्रादुर्भूत होइछ तँ एहि पर पशु-पक्षिओ धरि मोहित भए जाइछ।

व्यक्ति :—दूध सँ दही, माँटि सँ घैल तथा सोना सँ आभूषण बनैछ। स्पप्न-जल यद्यपि व्यवहारिक जगतक प्यास कथमपि नहि बुझा सकैछ मुदा स्वप्नद्रष्टाक प्यास बुझेबा मे ओ पूर्णतया समर्थ होइछ। बसातक प्रतिकूल ध्वजा लए चलला सँ ध्वजाक वस्त्र पाँछा हटैछ तथा हिमपात भेला सँ कमल बन नष्ट भए जाइछ।

अज्ञात पुरुष :—चन्द्रमा ने तेँ अपन चाँदनी केँ छोड़ैत अछि आ ने चाँदनी चन्द्रमा केँ। चन्द्रक सोलह कला मे पन्द्रह कलाक तँ उदय-अस्त एवं ह्रास-वृद्धि होइछ मुदा षोड़शी एहि विपर्यय सँ पृथक रहैछ। अतः ओ नित्या कहबैछ।

व्यक्ति :—चाँदनी सँ उन्मत्त चन्द्रमा सम्पूर्ण जगत केँ भ्रान्त बनबैत अछि। बिलारि उज्जर बाटी मध्य चाँदनी केँ दूध बुझि चटैत अछि, हथिनी वृक्ष-पत्र सँ छानल नीचाँक दण्डायमान चन्द्र किरण केँ मृणाल बुझि सूँढ़ सँ पकड़ैत अछि तथा रतिक उपरान्त सुन्दरी पलंग पड़ैत चाँदनी के स्वच्छ चादरि बुझि समटैत अछि।

अज्ञात पुरुष :—मिथिलावासी सर्वदा सत्यक संसेवक होइत छथि जे अपन अनुवर्त्तीय केँ कथमपि संकट मे नहि छोड़ैत छथि जाहि सँ जगत मे मिथिलाक एक पृथक अस्तित्व पाओल जाइछ।

ऊष्णता एवं प्रकाश अग्नि के धारण करैछ। अग्नि सँ एहि दुहु तत्त्व के पृथक केला पर अग्निक अस्तित्वक विनाश भए जाइछ।

व्यक्ति :—सभ प्रकारक समृद्धि शान्ति पर निर्भर रहैछ। शैक्षिक, आर्थिक, भौतिक, दार्शनिक एवं अन्य प्रकारक समुन्नति शान्तिक अपेक्षा करैछ। शान्तिक अभिघाते तँ संघर्षक रूप थिक ! शान्तिक अभाव भेला सँ आनन्दक उद्रेक होइछ जे प्रलयक रूप धारण करैछ जकर आगि मे पृथ्वी विलीन भए जाइछ, सुमेरु सन पर्वतो जड़ि जाइछ तथा अथाह सागर सुखा जाइछ तखन मनुष्य मात्रक कोन कथा ?

अज्ञात पुरुष :—जगत मे जँ प्रत्येक प्राणी अपन धर्मक पालन विधिवत् करैछ तँ सुख एवं शान्तिक वर्षा होइछ तथा प्रत्येक प्राणी सुखी ओ संतुष्ट भए अपन जीवन व्यतीत करैत जीवनक परम ध्येय मोक्ष के प्राप्त करैछ।

व्यक्ति:—महाशय ! पृथ्वी पर सँ धीरता, प्रभाव, तेज पराक्रम, न्याय आदि सद्गुण अन्तर्धान भए गेल। राजालोकनि मे पारस्परिक विरोधक भावना एवं स्वार्थपूर्ण द्वेषक प्राबल्य पाओल जाइछ। कतहु स्त्रीक अपहरण होइछ तँ कतहु धन-सम्पत्तिक लूटि, कतहु करुण क्रन्दन पाओल जाइछ तँ कतहु रुधिरक धार। जँ ओकरा मूर्त्तिमान कलियुग तथा देहधारी अधर्मक राज्य कहल जाय तँ कोनो अत्युक्ति नहि होएत।

अज्ञात पुरुषः—महाशय ! की मिथिलाधीश महाराज नरेन्द्र सिंह गृहस्थोचित गुण सँ युक्त धर्म, अर्थ एवं कामक सम्पादन मे सर्वश्रेष्ठ नहि छथि ?

व्यक्ति:—मिथिलाधीश महाराज नरेन्द्र सिंह मेरु सन धैर्यवान, सूर्य सन प्रतापी तथा चन्द्रमा सन कान्तिवान छथि।

लोकहितक एकमात्र भावना हुनक अभीष्ट थिक। ओ याचक के दान सँ तथा विद्वान के मान सँ सत्कार करैत छथि। मुदा एहि तरहक सद्गुण युगधर्मक अनुसार द्वेष-

पूर्ण मानल जाइछ। स्वतंत्र विचार, परोपकारी वृत्ति, निष्पक्ष न्याय एवं कुल ओ मर्यादाक रक्षा पटनाक शासक केँ कटु बुझि पड़ैत छैन्ह।

अज्ञात पुरुषः—महाशय! सूर्यकान्त मणि मे सूर्य तथा इंधनक संयोग सँ अग्नि उत्पन्न होइछ। दुर्जन स्वतः अपन पाप सँ विनाश केँ प्राप्त करैछ तथा परोपकारी पुरुष कर्त्तव्याकर्त्तव्यक विवेक भय सँ विमुक्त भए जाइछ।

निःसंदेह मिथिलाक मर्यादा एवं गौरवक रक्षा सतत् होएत तथा एक ने एक पुण्यात्मा एहि पुण्य भूमि मे अवश्य अवतरित होएताह जनिका सँ एहि प्रान्तक स्वतंत्रता एवं संस्कृतिक रक्षा होएत।

(पटाक्षेप)

दृश्य : दू

(भौराक राज सभा : महाराज नरेन्द्र सिंह, गोकुल-नाथ उपाध्याय, जाफर खाँ, हालाराय, सरदार मित्रजीत सिंह एवं सरदार उमराऊ सिंह आदि दरबारी लोकनि बैसल छथि।)

चारण गबैछ :—

अहंकारक संग घृणाक जतए द्वन्द्व अछि जारी।
उपर शान्ति नीचा छिटकैत अछि चिनगारी॥
दबल आवेग की ओतए उबैल कौखन नहि फूटैछ ?
संयम छोड़ि मानव की अत्याचारी पर नहि टूटैछ ?

जाफर खाँ :—महाराजाधिराज ! प्राणीमात्र आनन्दक इच्छा करैछ तथा जतऽ आनन्द प्राप्ति होइछ ओतहि ओकरा प्रेम उपलब्ध होइछ जे धर्म एवं जाति सँ सर्वदा पृथक रहैछ। धर्मक तात्पर्य ओहि गुण एवं तत्त्व सँ अछि जाहि आधार पर प्राणी अपन सत्य स्वरूप केँ धारण करैछ तथा जीवनक परम ध्येय मोक्ष केँ प्राप्त करैछ। जगत मध्य दुइ प्रकारक वस्तु पाओल जाइछ—एक प्राकृत तथा दोसर संस्कृत। वस्तु अपन स्वाभाविक अवस्थामे रहला पर प्राकृत तथा स्वाभाविक वस्तु केँ परिमार्जित कएलापर संस्कृत कहल जाइछ। एहि संस्कृत मे वर्ण व्यवस्थाक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि जे एक शरीरक भिन्न-भिन्न अंगमात्र थिक। मनुष्य मात्रक शरीरक

प्रथम भाग माँथ मे ज्ञान शक्ति, दोसर भाग वक्षस्थल मे बल-शक्ति, तेसर भाग पेट मे संग्रह-शक्ति तथा चारिम भाग पएर मे सेवा-शक्ति सन्निहित अछि। एहि चारू शक्तिक परस्पर सहयोग सँ सभ कार्य सम्पन्न होइछ तथा सभ अंग व्याप्त रहला पर शरीर सुदृढ़ रहैछ। एहिरूपेँ परमब्रह्मक शरीर मध्यहु ज्ञान-शक्तिरूप शिरःस्थानीय ब्राह्मण, बल-शक्ति वक्षस्थल रूप क्षत्रिय, संग्रह-शक्तिरूप उदरस्थानीय वैश्य तथा सेवा-शक्तिरूप पादस्थानीय शूद्र थिक। जन्मानुसार वर्णव्यवस्था केँ दोष देब उचित नहि थिक। कारी माँटि सँ बनाएल घैल कारी, लाल सूत सँ बनाएल वस्त्र लाल तथा मालदह आम सँ उत्पन्न वृक्षक आम मालदहे होइछ।

मिथिलाक संस्कृति मे शासन संचालनक कार्य तँ पूर्णरूप सँ राजाक हाथ मे रहैछ किन्तु ब्रह्म-बल वा अध्यात्म शक्ति जे सर्वोपरि थिक राजा केँ नियन्त्रित रखैछ। अतः कुलक्रमागत वर्णव्यवस्था केँ नैतिक दृष्टिएँ देखला सँ एक पैघ उपकार होइछ। चाहे आपत्ति काल हो वा शान्तिक देशक शिल्प, व्यापार आदि पर ओकर कोनहुटा प्रभाव नहि भए देशक सभ कार्य विधिवत् होइछ। एहि प्रसंगक—

"शस्त्रं द्विजातिभिर्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते"

वाक्य ब्राह्मणादि सभ वर्ण के धर्म एवं संस्कृतिक क्षयकाल मे शस्त्रग्रहणक आदेश दैत अछि।

अतः मातृभूमिक मर्यादा तथा अपन आत्म गौरवक रक्षाक हेतु हम रामनारायणक शोषणनीतिक विरोध करैत छी। एहि विरोधक अर्थ होइछ संघर्ष, संघर्षक अर्थ होइछ परिवर्त्तन तथा परिवर्त्तनक अर्थ होइछ जीवन।

हालाराय:—महाराजाधिराज ! लोक-कल्याण एवं अहिंसा सँ युक्त आचरणे केँ धर्म कहल जाइछ। क्रिये सँ पुरुषार्थक प्राप्ति एवं पुरुषक परिचय होइछ। उत्तम पुरुष अनेक कष्ट सँ क्लेशित भेलहुँ संकल्प सँ नहि हटैछ। मिथिलाक स्वतंत्रताक रक्षा तथा मातृभाषा मैथिलीक उन्नति एवं लोक-कल्याणक हेतु हमरा लोकनि जाति ओ धर्म केँ उपेक्षा कए अपना केँ एके शरीरक भिन्न-भिन्न अंग बुझैत छी।

शासक जतए प्रजा केँ घोर कष्ट दैछ।
रक्षक भक्षक बनि जतए सरवस हरैछ॥
धधकैछ भूखक ज्वाला घर घर मे।
माँस नहि मात्र साँस अछि अस्थिपंजर मे॥
की थिक सिद्धान्त लोकतंत्रक देशक प्रतिकूल ?
प्रजा चरित्रहीन बनय मेटय शक्ति समूल ?

सरदार मित्रजीत सिंह:—महाराजाधिराज ! धानक रक्षाक हेतु लोक तृण समूहक नाश करैछ। लोह अत्यन्त कठोर होइछ मुदा यत्न सँ पिघैल जाइछ। मदमस्त हाथीक मस्तक पर लोक युक्तिक द्वारा पएर रखैछ तथा युक्तिक द्वारा लोक बाघ-सिंह सन भयंकर जन्तुओ केँ वश मे अनैछ। अति तेजस्वी सिंह-शावक लघु भेलहुँ श्रेष्ठ हाथी केँ मारि दैछ। पवन अपन गति केँ रोकनिहार वृक्ष केँ उखाड़ि दैछ तथा अँधकार सूर्यक प्रताप केँ नहि सहि सकैछ। शौर्य गुण सँ सम्पन्न पुरुष अपन कर्त्तव्य-पथ सँ कथमपि विचलित नहि होइछ तथा कर्त्तव्य-पालन मे सर्वदा संलग्न रहैछ। एहि कोटिक पुरुष वा तेँ अपन आश्रित केँ संकट सँ मुक्त करैछ अथवा अपन उद्देश्यक पूर्त्तिक निमित्त पुरुषार्थी भए अपन प्राण गमबैत अछि, मुदा अपमानित भए कथमपि जीवन-यापन नहि करैछ।

उमराऊ सिंहः—व्यक्तिमात्रक गुण व्यवहार मात्र मे नहि भए कार्यदक्षता मे पाओल जाइछ। स्वप्नद्रष्ट हिंसक जन्तुक भय सँ नींद भने भंग भए जाइछ मुदा जाग्रतावस्था अएले पर ओकर असत्यता प्रतीत होइछ।

गोकुलनाथ उपाध्यायः—महाराजाधिराज एवं अन्य सभासद लोकनि! सभाक आयोजन कर्त्तव्याकर्त्तव्यक निर्णयक हेतु भेल अछि। मिथिला सतत् स्वतंत्र राष्ट्रक रूप मे अपन अपूर्व ज्ञान-गरिमा एवं विशिष्ट संस्कृतिक रक्षा करैत आएल अछि। नवाब अलीवर्दीक नीति यद्यपि एहि देशक प्रति बेजाय नहि कहल जाए सकैछ मुदा रामनारायणक कुटिल नीति सँ मिथिलाक अधिकारक हनन होइछ जकर रक्षा युद्ध मात्रेटा सँ भए सकैछ।

नरेन्द्र सिंहः—मंत्रीप्रवर एवं सभासद लोकनि! मन्त्रयुद्ध द्वारा लक्ष्मी प्राप्त केनिहार राजा केँ प्रायः शस्त्र युद्धक प्रयोजने नहि होइछ। जँ प्रयोजन होइतहुँ अछि तँ धनुर्धारी पुरुषक द्वारा प्रेषित वाण तँ एके शत्रुक आघात करैछ किन्तु नीति-वेत्ता द्वारा प्रेषित बुद्धि तँ समग्र शत्रुक संहार कए दैत अछि। ब्रह्मशक्ति एवं बल-शक्तिक पारस्परिक सहयोग सँ प्राणीमात्रक कल्याण होइछ। अतएव राजा अपन कर्त्तव्यपालनक हेतु ब्रह्मशक्तिक अधीन रहैत अछि।

गोकुलनाथ उपाध्यायः—सदाचारी एवं लोक-व्यवहार मे निपुण राजाक राज्यलक्ष्मी चिरस्थायी होइछ महाराज! ओहि राजाक राज्यलक्ष्मी स्वभावतः समस्त मानवक मनोरथक अनुकूल पाओल जाइछ।

राज्यक प्रति निष्ठावान एवं अनुरागी, विशिष्ट सहायक समुदाय सँ सम्पन्न, सर्वविधि परीक्षोत्तीर्ण, परिमार्जित

बुद्धिवाला, प्रत्युपकारी भावना सँ संवलित एवं समस्त प्रजावर्गक कल्याण मे तत्पर, अपन आकृतिक अनुसार भव्य ओ अद्भुत चेष्टा सँ सर्वथा प्रसन्न एवं विकसित कमल सन सुन्दर, शरणागत केँ आश्रय प्रदान केनिहार, चन्द्रमाक कान्तिक संग लक्ष्मीक प्रियतम रहितहुँ रण-राग मे निपुण नृप समर मे चंचल लक्ष्मी केँ वरण करैत छथि राजन् !

भला जाहि पुरुषक क्रोध ओ अनुग्रहक कोनो अर्थ नहि होइछ ओकर जीवनक कोन फल भए सकैछ ?

जनिक कोमल काव्य कला सँ सरस्वती लीलामयी बनैत छथि से की कठोर वचन नहि बजैत अछि ? कान्ताक वक्षस्थल पर आनन्द पूर्वक विचरनिहार हाथ की भयंकर मतवाला हाथी पर तीक्ष्ण वाण नहि चलबैत अछि ?

मनुष्यमात्रक साहस दुई प्रकारक होइछ एक सुसाहस तथा दोसर दुस्साहस। सुसाहसी दोसराक हितक हेतु अपन प्राणो संकट मे दैत अछि और दुस्साहसी प्रतिष्ठा, यश ओ स्वार्थसाधनक हेतु आत्म बलिदान करैत अछि।

अतएव मिथिलाक अक्षुण्ण स्वतंत्रताक घोषणा कएल जाइछ तथा मिथिलाक प्रजावर्ग केँ सूचना देल जाइछ जे कोनहुँ तरहक नजराना ओ कर पटनाक शासक एवं मुर्शिदाबादक नवाब अलीवर्दी केँ मिथिला सँ नहि पठाओल जाए। जय मिथिला !

(पटाक्षेप)

दृश्य : तीन

पटनाक सुबेदारी

(पटनाक शासक जैनुद्दीन, राजा रामनारायण सुत्रा, फौजदार भिखारी महथा एवं सलावत राय आदि दरबारी लोकनि बैसल छथि ।)

(नर्त्तकी गबैछ)

नींद न आवत प्रिय बिनु मोरी
आली कैसे परे अब चैन ॥
घरी घरी पल छिन योंही बीत
जात रहत मारग जोहत नैन ॥
बिनु देखे कल न परत है मानो मन
मोहत है दिनरैन ॥
अब कब मिलत प्राण प्यारो
उन बिनु है दिल बेचैन ॥
नील वरन फहरे दुकुल रही घटा सी
कामिनि दामिनि लगत दिनरैन ॥
जाको पचरंग किनारी सोइ मोरी प्रिय
बोलत कोकिला बैन ॥
पुहपन के हार घूट रम रहे सोई बग
पंत ऐसी लागे मेरी नैन ॥
यह छवि देख रीझत मेरी प्रभु ऐसो
लागत मानो मूरत है मौन ॥

(सैनिकक अभिवादन करैत प्रवेश ।)

सैनिकः—आलिजाह ! मिथिला से एक शख्स आया है और जियारत चाहता है ।

जैनुद्दीनः—हाजीर करो ।

(एक व्यक्तिक अभिवादन करैत प्रवेश)

व्यक्ति:—आलिजाह ओ महाराजा साहेब की जय हो ! आलिपनाह ! मिथिलाधीश महाराजा नरेन्द्र सिंह ने मुर्शिदाबाद के नवाब का अदल उठाकर अपनी आजादी की घोषणा कर दी है। उसने पटने के हाकिम को किसी तरह का नजराना देना भी बंद कर दिया है। नरेन्द्रसिंह को नवाब की अमलदारी तो विलकुल ही पसन्द है लेकिन वह राजा साहेब के शान ओ शौकत के खिलाफ है। उसने राजा साहेब को राजा मानसिंह के समान हिन्दुओं के दुश्मन एवं देशद्रोही करार की है।

रामनारायण:—नरेन्द्रसिंह को ओ ताकत ! चीँटी होकर आशमान छूना चाहता है ? चिड़ियों की तरह खुले जहाँ में उड़ना चाहता है ? फौजदार ! तिरहुत को सीर करने का इंतजाम करो और नरेन्द्रसिंह को जींदा पकड़ कर दरवारे-आम मे हाजीर करो। सलावतराय के साथ वखतसिंह, कुल उद्धरन, रोड़मल्ल, सुन्दर, रणधीर और भानु शुकुल के साथ चुने हुये पाँच हजार घुड़सवारों को तिरहुत कूच करने का हुक्म दो।

जैनुद्दीन:—हाकिमे आला ! सारे सुबे में नवाब की अमलदारी के खिलाफ रियाया सिर उठाने लगी है। सुबे के दक्षिण के हिस्सों के जमींदारों में छत्रधारी सिह, उदवन्तसिंह आदि ने तो खुलेआम नवाब के खिलाफ बगावत कर दी है। मुस्तफा खाँ ने एक बड़ी फौज के साथ राजमहल के कुछ हिस्सों को जीत कर पटना की ओर बढ़ आया है। क्या खूब होता इस हालत में हाकिमे आला तिरहुत को शिकस्त करने के मनसुवे को थोड़ी देर के लिये छोड़ देते।

रामनारायण:—आलिपनाह! मैं इन ब्राह्मणों को पहचानता हूँ। ए वचन-शूर होते हैं। इन्हें लड़ाई से क्या वास्ता? ज्ञान विज्ञान मे पूर्ण और तप के धनी ए ब्राह्मण जिन्हें रज्जु मे सर्प का तथा घी मे पत्ते का भ्रम होता है, लड़ाई शुरुह होते ही इस तरह मैदान से भाग जायेंगे जिस तरह आफताब के उगते ही अँधियाली भाग जाती है।

मेरा ख्याल है नरेन्द्रसिंह की हार से सारे सुबे के जमींदार डर जायेंगे और बकाये मालगुजारी वे आप से आप नवाब के खजाने में दाखिल करेंगे।

जैनुद्दीन:—जैसी सलाह हो। लश्कर सजाया जाय और तिरहुत की बगावत को काबू की जाय।

(पटाक्षेप)

दृश्य : चारि

भौरा गढ़

(नगरक दृश्य)

एक नागरिक :—

सहनशीलता कें अपना कए
ब्राह्मण नहि जीबैछ।
लक्ष्य हेतु नहि अपमान हलाहलक
ओ पीबैछ।

सहैछ कठिन बेदना ओ जे नहि
पीबैछ अपमान।
बुद्धि अछि जकरा तेजक की ओ
नहि करैछ वलिदान ?

धन्य मिथिला! धन्य एहि देशक बासी जे चापल-विलास[1]; उद्दालन[2], कुरङ्गवृत्ति[3], धर्मगुण-च्छेद[4] एवं वक्रताक[5] दोष सँ रहित पाओल जाइछ। जतए मधुसमागम[6], परदारोदन्त[7], क्षणिक स्थिति[8], भावसंकर[9],

---

१. चपलता, परस्त्री पर हस्तादिक क्षेप, निरर्थक धनुषग्रहण।
२. धनक नाश।
३. मृग सन कूदब तथा धनादिक हेतु प्रीति भंग।
४. धनुषक डोरक खण्डन, दान-पूजा एवं ब्रह्मचर्यादि गुणक अभाव।
५. कुटिलता।
६. मद्यपान।
७, परस्त्रीसेवन; दोसरा कें अघात करबाक प्रवृत्ति।
८. वचन परिवर्त्तन।
९ विविध अभिप्राय।

व्यामिश्रता[१०], परद्रव्यअभिलाष[११], अक्रमगति[१२], शस्त्रसंपात[१३], वन्धविधि[१४], निपातश्रुति[१५], एवं दोष चिन्ता[१६] आदि दोषक अभाव पाओल जाइछ।

मिथिलाक प्राणीमात्रक भुकाव धर्म सदाचार, प्रिय वचन एवं ज्ञान-अर्जनक दिसि पाओल जाइछ। एहि देशक नागरिकक लक्ष्मी पात्रदानक हेतु, चित्तवृत्ति कर्त्तव्य-पालनक हेतु तथा विद्याभ्यास विनयशीलताक हेतु होइछ। समस्त समुद्रीय धनराशि एवं पार्वतीय सभ वस्तु सँ संयुक्त मिथिला श्री ओ शोभा मे लक्ष्मीक भोग भूमि सन प्रतीत होइछ।

मिथिला मे निसर्गकृष्णता[१७] ओ द्विधाभाव[१८] रमणीक केश कलाप मे, कुटिलता[१९] चितवन मे, भंग-संगम[२०] भृकुटि मे, वर्णसंकरता[२१] नेत्र मे, विवेक-विकलता[२२]

---

१०. एक वर्णक कर्त्तव्य दोसर वर्णक द्वारा पालन होयब।
११. परद्रव्य अपहरणक लालसा।
१२. अन्याय प्रवृत्ति।
१३. शस्त्रक व्यवहार।
१४. जंजीर सँ बँधबाक विधि।
१५. वेद एवं सदाचारक स्खलन।
१६, दोसराक निन्दा करब।
१७. स्वाभाविक कारी, स्वाभाविक मलिनता, दुराचारिता।
१८. बाम दहिन करब, दुइ प्रकारक मनोवृत्ति, दुइ प्रकारे घात करब।
१९. वक्रता, टेढ़पन।
२०. भौं उपर नीचाँ करब, मैत्री भंग करब।
२१, वर्णक सम्मिश्रण, गोर कारीक विचार।
२२. परस्पर संलग्नता, चतुराई, शून्यता।

कुच कलश मे; दरिद्रता[२३] कटि मे; जड़ता[२४] नितम्ब मे; वृद्धि विलोपदर्शन[२५] पएरक नह मे तथा पांसुलता [२६] पएरक तरबा मे पाओल जाइछ।

(दोसर नागरिकक प्रवेश)

दोसर नागरिक :— हद भए गेल। अहंभाव गुण केँ एहि सदृश झँपैछ जेना धुआँ आगि केँ। विद्याक बिना रूप, क्रियाक बिना ज्ञान, शक्तिक बिना बुद्धि और उद्योगक बिना लक्ष्मी निरर्थक थिक। समय एवं अवस्थानुसार लोक-धर्म, दर्शन एवं साहित्यक सृजन होइछ। रमणीक सौंदर्य ओ शृंगार प्रिय केँ रंजनक हेतु होइछ। जँ प्रिये नहि तँ शृंगार कथिक?

धनरहित कामुक केँ वेश्या तिरस्कार करैछ। अध्ययन समाप्त कएला पर शिष्य प्रायः आचार्यक सेवा छोड़ि दैछ तथा फलविहीन भेला सन्ता पक्षी वृक्ष केँ छोड़ि दैछ।

रमणीक विभ्रम विलास रतिक समय तावत धरि चलैछ जावत धरि नील कमल सदृश स्वच्छ अभा सँ युक्त नेत्र बन्द नहि भए जाइछ।

सृष्टिक रचना गुण ओ अवगुणक मेल सँ भेल अछि। विष परिमित मात्रा मे स्वास्थ्यक हेतु गुणकारी होइछ। मधु एवं घी समान परिमाण मे संयुक्त भेला

२३. कृशता, निर्धनता।
२४. स्थूलता, मूर्खता।
२५. बढ़ल केँ काटबाक दर्शन, लक्ष्मीक नाशक दर्शन।
२६. धूरामय, मलिनता, व्यभिचार प्रवृत्ति।

सँ विष बनि जाइछ। मनुष्य संस्कारतः मृदुभाषी ओ कोमल स्वभावक रहितहुँ समयानुसार अत्यन्त कठोर बनैछ। कोमल काव्य कला मे निपुण कवि जे अपन सुकुमार हाथ सँ केलि करैछ से की समय पाबि वज्र सन कठोर वाणक प्रहार शत्रु पर नहि करैछ ?

लुप्त होइछ सत्य-सरलता छल प्रपंचक बीच।
ह्रास होइछ धर्मक धनक प्रलोभन बीच॥
टका पर बिकाइछ जातिगत अभिमान।
होइछ वासना पर पवित्र प्रेमक बलिदान॥
जन जरैछ, धरती फटैछ, टूटैछ पृथ्वीक छोड़।
कनैछ खग, जरैछ तरू होइछ नहि भोर॥
हृदय दग्ध तृषित मोन, जरैछ प्राण।
आश्चर्य किएक नहि दैछ लोक एहि पर ध्यान॥

देश पर आघात, धर्म ओ आत्मसम्मान असुरक्षित तथा करक भार सँ दबल लोकक अनुराग शास्त्र-पुराण, काव्य ओ संगीत मे नहि भए शस्त्र मे हेबाक चाही। शास्त्र-पुराण, काव्य ओ संगीत सँ आतंकक विनाश नहि भए सकैछ। एहि हेतु पराक्रम एवं शस्त्रेटा पर्याप्त भए सकैछ।

प्रथम नागरिक :—चारू आश्रम ओ समस्त वर्णक प्रजा केँ पिता सन पालनिहार, बृहस्पतिक सन राजनीति मे कुशल तथा साक्षात इन्द्र सन पराक्रमी जनिक भुजा रूपी दण्डहि शत्रुक क्षय-कारक अछि नर-रूप मे पाबि प्रजा के कोन वस्तुक चिन्ता भए सकैछ ?

जन्म सँ अबाध रूप मे प्राप्त राजलक्ष्मीक धारणात्मक गुणक हेतु जे मिथिलाक सभ जाति ओ वर्गक प्रियपात्र छथि, जे युद्ध भूमिक अतिरिक्त आजीवन मनुष्य हिंसा नहि करबाक दृढ़ प्रतिज्ञ छथि, जे समर-भूमि मे उपस्थित समवेक्ष शत्रु केँ दयाक पात्र बुझैछ तथा जे सन्तुलित रूप सँ धर्म, अर्थ एवं काम आदि त्रिवर्गक सम्पादन मे सतत् दत्तचित रहैछ एहि महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्य मे चोर, डाकू, हिंसक जन्तु एवं जंगली जानवरक कोन भय भए सकैछ ?

न्यायक आसन सँ समुचित निर्णयक कारणे जे धर्मक प्रति महान अनुरागक उपार्जन कएलैन्ह; व्याकरण, राजनीति, संगीत एवं तर्क आदि विशाल एवं गूढ़ शास्त्रक अध्ययन, स्मरण, सम्यक अनुभूति ओ व्यवहार सँ जे प्रर्याप्त यश केँ प्राप्त कएलैन्ह; युद्ध मे जे अत्यधिक साहस एवं स्फूर्त्तिक प्रदर्शन करैछ; जे राति-दिन दान ओ मानक प्रसंग मे सर्वदा उदार भाव सँ सजग रहैछ तथा जे समुचित रूपेँ मालगुजारी पाबि प्रजा-पालन मे तत्पर रहैछ एहि नरेन्द्र सिंहक राज्य मे आतङ्क ?

दोसर नागरिक :—पतिक कामनाक हेतु स्त्री केँ पतिक प्रति प्रेम नहि भए। अपन इच्छा रतिक पूर्त्तिक हेतु प्रेम होइछ।

माँगला सँ न्यायोचित अधिकार ज नहि भेटैछ।
छीनैछ तेजस्वी समर कए जीति या तँ स्वयं मरिकए॥

(पटाक्षेप)

दोसर अङ्क

दृश्य-एक

(भौरागढ़ : अन्त:पुर)

(महारानी स्वत: गबैछ)

भासलि नाव अगम जल सजनी
पवन बहय बड़ जोर ॥
एकसरि नारि कुदिन फल सजनी
हठमति नन्द किशोर ॥
के कह की गति होयत सजनी
थर थर जिव मोरा काँपय ॥
दुरजनि एक न होएति सजनी
प्रकट भेल पुरकृत पाप ॥
जननी हमर जरातुर सजनी
तकइत होयतीह बाट ॥
विकल हृदय नहि किछु फुरए सजनी
की विधि लिखल ललाट ॥

(नरेन्द्र सिंहक प्रवेश)

नरेन्द्र सिंह :—महादेवी ! पद्मिनीक मूल खंड, नीलकमलक आभूषण तथा अशोक वृक्षक पल्लवक शय्या जे श्रीखण्ड चानन सँ भीजल एवं रमणीक मोतीक हार सँ शीतल ओ सुशोभित होइछ, कोन पुरुषक संतापक हरण नहि करैछ ? पुरुषक दृष्टि रूपी नदी मे रमणीक केश, नेत्र, मुख एवं कुच क्रमशः शैवाल, कुमुद, कमल एवं बालुकामय प्रदेशक शोभा धारण करैछ।

महारनी :— कली-कलीक रसपान केनिहार भ्रमरक समान नित्य नवीन मुग्धा सँ अठखेलि केनिहार पुरुष भ्रमर नामे उपालम्भक

आस्पद कएल जाइछ प्रभु ! पवनक झकोर सँ जल मध्य चञ्चल तरङ्ग तँ उठैछ किन्तु जल सँ पृथक भेलहुँ ओ पुनि जलरूप भए जाइछ नाथ !

नरेन्द्र सिंह :—महादेवी ! व्यङ्ग एवं रूदन नारीक प्रधान अस्त्र होइछ। सङ्गम ओ विरह मे प्रियतमाक विरहे श्रेष्ठ होइछ। सङ्गम मे तँ ओ एकाकार रहैछ मुदा विरह मे त्रिभुवनमय भए जाइछ। रस राजत्व प्रदान केनिहार तत्त्व तँ वियोगे थिक जाहि मे संयोगजन्य सुखक उथरापन नहि रहि अनुभूतिक गहनता रहैछ।

महारानी :—वस्त्र रङ्गहीन भेला पर पुनः रङ्गल जाइछ, शरीरक अङ्ग रूख भेला पर तेल मलला सँ पुनः चिक्कन बनाओल जाइछ तथा द्रव्य जूआ मे हारला पर पुनः जीतल जाइछ मुदा प्रियक विरक्त हृदय कोनहुँ तरहे नहि प्राप्त कएल जाइछ नाथ !

नरेन्द्र सिंह :—पुष्प रस सँ भरल कमल कँ रहैत भ्रमर कुसियारक रसक पान नहि करैछ महादेवी !

पोखरिक सकुचाएल कमल तथा अत्यन्त दूर आकाश मे उदित सूर्यक प्रीति कोनो बाह्य कारणवश नहि भए एक विशेष तत्व सँ होइछ जे दुहु कँ परस्पर मिलबैत अछि।

महारानी :—प्रेम-विकल संसारक प्रवाह नदीक स्रोत सन निरन्तर प्रवाहित होइछ नाथ ! और जे व्यक्ति ओहि प्रवाह मे बहि जाइछ ओकर पुनः प्रत्यावर्त्तन नहि होइछ।

प्रेमक महोदधि अपार अछि महाराज ! दुर्बल नारी-हृदयक हेतु ओकरा पार करब तँ दूरक वस्तु थिक ओ आ तँ तटहि सँ आपस होइछ वा ओहि मे भासि जाइछ।

नरेन्द्र सिंह :—जल सँ वियोग भेला पर अपन प्रिय प्राण कँ न्योछावर केनिहार मीन तथा दीपक प्रकाश पर जान देनिहार फतिंगा

अपन प्रियतमाक सौंदर्यक अनुभूति सँ अनभिज्ञ रहैछ। मनुष्यक हालत ओकर ठीक बिपरीत होइछ। ओ मीन एवं फतिंगा सदृश उतावला नहि भए अपन प्रियतमाक रूपक छटा कें निहारैछ, ओहि मे संतप्त होइछ और सतत् नोर बहबैछ महादेवी!

प्रियतमाक सङ्ग पैघ राति छोट तथा चन्द्रमा अत्यन्त शीतल लगैछ किन्तु वियोगी कें ओ राति अत्यन्त पैघ तथा चंद्रमा अङ्गार सन दग्ध प्रतीत होइछ। विरहक अवस्था मे चित्त स्थिर नहि रहैछ तथा एकहि वस्तु कौखन ककरहु हेतु तँ अनुकूल होइछ और ककरहु हेतु प्रतिकूल। सूर्यक उदय मात्रहि सँ कुमुदबन सुरझाइछ तथा शोभा-विहिन होइछ एवं कमलबन अभिनव शोभा कें धारण कए प्रफुल्लित होइछ। रात्रि मे स्वच्छन्दता सँ विचरिनिहार उल्लू हर्ष विहिन भए अपन अन्हार नीड़ मे नुकेबाक उपक्रम करैछ और चकवा रात्रि वियोग कें अनन्तर पुनः प्रियामिलनक उत्कण्ठा स प्रफुल्लित होइछ। प्रचण्ड सूर्यक किरण जँ उदयाचलक शिखर पर आरूढ़ होइछ तँ शीत-रश्मि चन्द्रमा अस्ताचल दिसि लटकैछ। अतएव प्राणीमात्र कें अपन कर्मानुसार बिबिध प्रकारक सुख-दुखक परिणाम भोगए परैछ।

महारानी :—राजन्! शूरवीर, धनुर्धर रण मे शत्रु कें परास्त कए चंचल लक्ष्मी कें वरण केनिहार पुरुष जीव एवं विषय तथा जगतक सम्पूर्ण बुद्धिग्राह्य पदार्थ कें माया, स्वप्न सन मिथ्या, कदली-स्कन्ध सन निःसार तथा प्रतिध्वनि सन अप्रत्यक्षक वस्तु बुझैछ।

एहि तरहक पुरुष कमल सदृश जल-मध्य रहि जल सँ निर्लिप्त रहैछ तथा व्यवहार मात्रे तक प्रवृत्ति कें सीमित रखैछ।

कुसुम फूलक उपयोग रंगमात्रेटा लेल होइछ प्रभु! सुमन समूह एवं नूतन पल्लव केँ मानिनी बुझि मलयसमीर मान-भङ्गक हेतु गुदगुदा कए उद्वेलित करैछ एवं ओकर कोमल नारी हृदय भुलावा मे पड़ि वियोगानीलक ताप मे तपैछ और प्रिय मिलनक उद्भट अभिलाषा मे नोर बहबैछ।

नरेन्द्र सिंह :—नदी ओ मनुष्यमात्रक समान अवस्था होइछ महारानी! ई दुहु जँ बढ़ैछ तँ कतेको उपद्रव करैछ। एहि मे विवेकहीन तँ भीजैछ, पाँक मध्य फँसि जाइछ एवं डूबि जाइछ किन्तु विवेकी काम-राग एवं धर्मानुराग सँ सन्तुलित रूप मे खींचल जाइछ तथा सेतुरूपी विवेकक द्वारा प्रेम-प्रवाह अवरुद्ध भेला पर नेत्ररूपी मृणालक डाँट सँ स्नेह-रूपी जल पीबि अपन प्यास केँ बुझबैछ। ओहि पुरुषक बुद्धि स्वयं विषयी बनि प्रत्येक वस्तु केँ विषयक रूप मे ग्रहण करैछ तथा प्रकृति ओ पुरुष एकाकार रूप मे पुरुषार्थ सिद्धक प्रयत्न करैछ। एवंक्रमेँ पुरुष ओ प्रकृतिक सम्मिलित धार एक रूप मे अनन्त दिसि प्रवाहित होइत नाम ओ रूप केँ छोड़ि विशुद्ध तत्त्व बनि जाइछ महादेवी!

(प्रतिहारीक प्रवेश)

प्रतिहारी :—महाराजाधिराजक जय हो! उपाध्याय जी दर्शनाभिलाषी छथि।

(पटाक्षेप)

दृश्य : दू

भौराक राजसभा

(महाराज नरेन्द्र सिंह एवं आन-आन सभासद लोकनि यथास्थान बैसल छथि।) चारण गबैछ :—

श्रोत्रियवंश खड़ोरय मूलक भौर ग्राम कृत वासी।
मैथिल ब्राह्मण जाति महोत्तम सकल शास्त्र अभ्यासी॥
पण्डित शिरोमणि दिनमणि सन विद्या कमल प्रकाशी।
धर्म धुरन्धर सुन्दर सभविधि चरित सुललित सुखरासी॥
नृप महेश ठक्कुरशुभ अंकुर नरेन्द्रसिंह भेला महिक महाराजा।
पोसल प्रजा पिता सन, संहारल अरिक समाजा॥
राजधर्म दुहु रक्षा हेतु लेला कलिक अवतारी।
दुष्ट समूह विनाशक कारण तनिक तेज तरुआरी॥

(चरकक अभिवादन करैत प्रवेश)

चरक :—मिथिलाधीशक जय हो! जय मिथला ओ मैथिली!
रामनरायण भूप तेँ कह्यौ मुखालिफ जाय।
हाकिम को मिथिलेश ने दीन्हो अदल उठाय॥
सीर करो तिरहुति को ता के रची उपाय।
फौजदार महथा भए सङ्ग सलावति राय॥
वखत सिंघ कुल उद्धरन रोड़ मल्ल दिल पूर।
चौभान भानु भानु सुकुल एक एक तेँ सूर॥
याही सभ तैनाथ करि फौजे पाँच हजार।
दिगसुल सन्मुख जोगिनी महथा उतरे पार॥

नरेन्द्र सिंह:—बैर पाकि केँ सुखाइछ तँ फूलि जाइछ। स्त्री, कुटुम्ब आदिक भार सँ दबल तथा दुर्भाग्य सँ प्रेरित मोन गाड़ी सदृश

कुपथ पर जाइछ। कुलटा स्त्री अत्यन्त लज्याक प्रदर्शन करैछ एवं नुनगर पानि बहुत ठण्डा होइछ।

जाफर खाँ :— स्वच्छ जल सँ धोल अंग मे मैल नहि पाओल जाइछ महाराज! दान, भोगक अतिरिक्त सम्पत्ति एक तेसर वस्तु दैछ—शक्ति ओ सम्मान।

दिवस सँ निशा श्रेष्ठ मानल जाइछ। मुदा निशा ओ दिवस दुहु निष्फल होइछ जँ ओहि मे नायक एवं नायिकाक मिलन नहि होइछ। पवन तथा काष्ठ सँ युक्त आगि जलाभाव मे शान्त नहि होइछ।

रामनारायणक कलुषित प्रवृत्ति एवं मानसिक दुर्वलता केँ डाहबाक सभ सँ प्रवल साधन थिक तरुआरि एवं अटल धैर्य। एहि विषम परिस्थिति मे साहस ओ खड्गमात्रहि अवलम्ब होइछ महाराजाधिराज!

दुख मे बन्धु, वैद्य पीड़ा मे, संगी घोर विपद मे।
दुसह दीनता मे आश्रय, उत्साह निराशा नद मे॥
भ्रम मे ज्योति, सुमति सम्मति मे, दृढ़ निश्चय संशय मे।
छल मे क्रान्ति, न्याय प्रभुता मे, अटल धैर्य वन-भय मे॥

हालाराय :—चित्र कर्मक हेतु तीन वस्तुक आवश्यकता होइछ—कर्त्ता, आधार तथा उपादानक महाराजाधिराज! मुदा कलाक नाथ परमशिवक लीला विचित्र अछि जे एहि संसाररूपी विशाल चित्र केँ बिना कोनो आधार ओ उपक्रमक निर्माण करैत छथि।

छल ओ प्रपञ्चक भीत्ति पर आधारित राजनीति मे मित्रता, धर्म, वर्ण, संस्कृति आदिक प्रतिकूल

स्वार्थ लोलुपता एवं अर्थक दृष्टि सँ आवद्ध पाओल जाइछ। एहि दुषित भावनाक अन्त संग्रामक बिना कथमपि नहि भए सकैछ जे नैतिक शक्तिक अभिव्यक्ति, सहिष्णुता, धीरता, सत्यवादिता, अध्यवसाय, आत्मत्याग एवं पराक्रमक इतिहास थिक।

न्याय शान्तिक न्याँस थिक, जाधरि ओ नहि अबैछ
कोनो तरहे महल शान्तिक सुदृढ़ नहि रहि पबैछ।

नरेन्द्र सिंह :—मंत्री प्रवर एवं सभासद लोकनि! मिथिलाक अहोभाग्य जे एहि देश केँ नीतिनिपुण मंत्री, पराक्रमी योद्धा एवं शस्यश्यामला भूमि प्राप्त अछि। एहिठामक नागरिकक जीवन कीर्तिसंचयक हेतु, लक्ष्मीसंचय पात्रदानक हेतु एवं शरीर धारण परोपकार निमित्त पाओल जाइछ। एहि देशक स्वतंत्रताक अपहरण के कए सकैछ?

गोकुलनाथ उपाध्याय :—महाराजाधिराज ओ सभासद लोकनि! कपूर सदृश स्वच्छ चन्द्रमाँ केँ आकाश मध्य चूडामणि सन चमकला सँ समुद्र मे उन्माद उत्पन्न होइछ, कुमुदगण मे विकाश होइछ, कमल मे मलीनता अबैछ, चन्द्रकान्तमणि द्रवित होइछ तथा शेफालिकाक फूल खसब प्रारम्भ करैछ। व्यक्तिक मूल्य ओकर व्यवहार सँ आँकल जाइछ। युद्ध यद्यपि मानवीय प्रतिहिंसात्मक वृत्तिक व्यंजना थिक जकर अन्तराल मे निर्माण तथा निर्माणक अन्तराल मे ध्वंसात्मक प्रवृत्ति रहैछ मुदा ई तावत धरि नहि बन्द भए सकैछ जाबत धरि मानवक सात्वकी वृत्ति राजसी एवं तामसी वृत्ति पर अखण्ड अधिकार नहि करैछ। राष्ट्रक विकास तथा उत्थानक हेतु दण्डक आवश्यकता होइछ। प्राणीमात्रक रक्षकक आत्मा सँ उत्पन्न ब्रह्मतेज सँ निर्मित दण्डक सृजन

स्वतः ब्रह्मा सँ भेल जे राजाक रूप मे पृथ्वी मध्य पाओल जाइछ।

राजाक दुई प्रधान कर्त्तव्य होइछ—दण्ड धारण कए अपन राज्यक प्रजा मध्य ओकर सम्यक् प्रयोग सँ प्रत्येक प्राणी केँ अर्थ, धर्म एवं सदाचारक पालनक हेतु विवश करब तथा सतत् अपना केँ एहि योग्य बनाएब जाहि सँ दण्डक सम्यक् प्रयोग तथा राष्ट्रक मर्यादा ओ स्वतंत्रताक रक्षा समुचित रूपेँ भए सकए।

धर्मस्थापनाक निमित्तमात्रहि राजाक निर्माण होइछ तथा राजा मे प्रजा-धर्मक सौंदर्य केँ देखि भक्ति भाव रहैछ।

प्रजा शक्तिए राज शक्ति होइछ
प्रजा होइछ राजाक धन।
प्रजा शक्ति सँ हीन राजाक होइछ
निराधार जीवन ॥
नृपति होइछ प्रजाक संरक्षक, नहि
होइछ निरंकुश स्वामी।
अपन नहि प्रजाक सुखक नृप होइछ
अनुगामी ॥

नरेन्द्र सिंह :—मंत्रीप्रवर! मिथिलाक राजभक्त प्रजा एवं सभासद लोकनि! युद्धक आह्वान कएल जाइछ। सेनाक सजावट तथा शुभ घड़ी एवं शुभ स्थानक विचारक हेतु आदेश देल जाइछ। यथाशीघ्र राज ज्योतिषी केँ बजाए शुभ घड़ीक निर्णय हो।

(ज्योतिषी सर्वज्ञान झाक प्रवेश)

सर्वज्ञान झा :—महाराजाधिराजक जय हो ! जय मिथिला !

नरेन्द्र सिंह :—ज्योतिषी जी। मिथिलाक संकटावस्था मे कर्त्तव्या-कर्त्तव्यक परामर्शक हेतु बजाओल गेलहुँ अछि। अपने तँ सर्वज्ञ छी। युद्धक फलाफल, शुभ घड़ी ओ युद्धक हेतु शुभ स्थानक प्रसंग मे परामर्श देल जाए।

सर्वज्ञात झा :—महाराजाधिराज ! धर्म ओ सत्यक विजय होएत तथा यथार्थतः महाराज नरेन्द्र इन्द्र सन पराक्रम एवं मेरुसन अटल धैर्यक प्रदर्शन एहि धर्म युद्ध मे करताह। महाराजक यश दशो दिशा मे प्रसारित भए मिथिलाक गौरवक बृद्धि करत।

पुराण प्रसिद्ध कमला ओ बलानक मध्य हरिनाक मैदान मे युद्धक शिविरक स्थापना तथा गङ्गद्वार घाटक समीप शत्रु सँ मुकाविला कएल जाए।

महाराजाधिराज ! ई युद्ध मिथिलाक इतिहास मे एक विशिष्ट स्थान राखत जाहि सँ मिथिलाक भावी संतान केँ आत्मत्यागक प्रेरणा भेटतैक तथा महाराजक पराक्रम इतिहासक वस्तु होएत।

(पटाक्षेप)

दृश्य तीन

युद्ध-शिविर

(फौजदार भिखारी महथा तथा सलावत रायक संग आन-आन सैनिक अफसर)

नर्त्तकी गबैछ :—

चले फौज नाजिम को बाजत नगारे।
सभे खुल गए तोपखाने सकारे ॥
घटा गज के उपर सोँ गाजत निशानैँ।
जजायिल धमक्का लसेँ चन्द्रबानैँ ॥
अही धर मही कोल दिक्पाल कम्पैँ।
उड़े गर्द अम्बर भरे सूर झम्पैँ ॥
दमामा नफीरी ओ कर्नाल बोलैँ।
बड़े दलदले रे सभे दीप डोलैँ ॥
खड़ैतेँ खड़े खूब खामिन के आगेँ।
बड़े रङ्ग तेँ जङ्ग के जोर पागेँ ॥
बड़े मोद ले खुल गए द्वार आवैँ।
जो पक्खर लिए शेख सैयद सबारे ॥
जो आगे छड़ीबान के दल बिराजैँ।
बरच्छा के छाहेँ किए रंग साजैँ ॥
चलो जी शिताबी लगी दूर जाना।
लदे साथ छक्कड़ में केते खजाना ॥
बड़ो दाप तेँ कूच दर कूच आवैँ।
कहोँ सान को नाहि मघवान पावैँ ॥
सभैँ तो पटी बान्हि कम्मर जड़ावा।
पुछे राह मेँ दूर केते भवाड़ा ॥

(चरकक अभिवादन करैत प्रवेश)

चरक :—फौजदार साहेब की जय हो! हुजूरेआली! रङ्ग में भङ्ग मालूम पड़ता है। महाराजा नरेन्द्र सिंह के जवानों में गजब का जोश और दिल के समुन्दर में तुफानों का उमंग मालूम पड़ता है।

दसो दिसा अनोर सोर घोर बम्ब बज्जई॥
कहूँ कमान बान सान भाँति भाँति देखिए।
निदान मों मैदान बीच भीम से बिसेखिए॥
चले महा बली तयार होय भौन भौन सें।
तुरङ्ग छेड़ छाड़ में तुलै न पौन गौन तें॥

भिखारी महथा :—राय साहेब! ए सभी तभी तक रहेगा जब तक जंग नहीं होता है। पोथी और पतरों के साथ जोड़-जोड़ से चिल्लाने और हाथ पटकने से जङ्ग नहीं जीती जाती। तोप की आग और बर्छे की नोक के सामने कलम की नोक कब तक कायम रह सकेगी?

सलावत राय :—फौजदार साहेब! बर्छे की नोक से कलम की नोक ज्यादा जहरीली होती है। बर्छे की घाव तो दवा के जरिये छूट जाती है मगर कलम की नोक की घाव फौलाद का काम करता है जिसका कहीं इलाज नहीं होता।

जीत और हार का फैसला तो जङ्ग से होगा मगर नरेन्द्र सिंह की रियाया के जोश को देखकर कलेजा हाथ को आ जाता है और दिल में धड़कन पैदा होती हैं।

सफीर ने खबर दी है कि तिरहुत के छोटे-छोटे जमींदारों ने नरेन्द्र सिंह को मदद देने का फैसला किया है। मिथिला के अफगान जो पहले से ही नवाबआली से चिढ़े हैं नरेन्द्र सिंह को इस जङ्ग में अपना राजा मान कर मदद

करने का फैसला किया है। मालूम नहीं इस हालत में हमारे तोप और लश्कर कहाँ तक काम कर सकेंगे।

भिखारी महय।:—राय साहेब! नाम से मय होता है। बाघ और सिंह के सामने कोई नहीं जाता। सिंह के छोटे बच्चे भी मतवाले हाथी को चीर देता है। नवाबआली अलीवर्दी का नाम ही जङ्ग में गजब का काम करेगा और सचमुच ही उनके नाम से जङ्ग जीती जायेगी।

लश्कर को सजाया जाय और सिपाहियों को होशियार कर दी जाय। भाटों को हुकुम दी जाय कि सिपाहियों के जोश को उभरे और नवाबआली के गुणों का बखान करें ताकि आम रियाया असलियत से वाकिफ हो सके। सिपाहियों को सख्त मनाही की जाय कि कोई ऐसा काम न कर बैठे जिससे रियाया में नवाबआली के खिलाफ नफरत हो।

(पटाक्षेप)

दृश्य : चारि

(मौरागढ़ : अन्तःपुर)

महारानी स्वतः गबैछ :—

कएल न काली देवी तुअपद अरचा ॥
जनम-जनम मोर विषयक चरचा ॥
एक अवलम्ब तुअ पद अछि हमरा ॥
हृदय हमर छल मलीमस भमरा ॥
भगति रहित खलमति हम कनलहुँ ॥
कोटि अब भव दुःख कतय न सहलहुँ ॥
अरज करथि चन्द्र मति दिअ हमरा ॥
करह आनन्द मोरा महादेवी कालिका ॥

(नरेन्द्र सिंहक प्रवेश)

नरेन्द्र सिंहः—त्याग एवं विरागपूर्ण साधनामय शुद्ध हृदये भक्तिक अधिकारी होइछ महादेवी !

नारी पुरुष केँ भक्ति दिसि उन्मुख नहि होमए दैछ। संसार समुद्र केँ पार करबाक मार्ग मे कनक और कामिनी दुहु दुष्कर घाटीक रूप मे पाओल जाइछ तथा नारी सौंदर्य मे मानव मन केँ विमुग्ध कए ओहि मे विविध प्रकारक भावक तरंग केँ उद्वेलित करबाक क्षमता पाओल जाइछ।

महारानीः—नाथ ! नारी सौन्दर्य सरोवरक एक तरंग तँ होइछ किन्तु ओ उच्छृङ्खल नहि भए लज्जाशील होइछ। नारीक मोहिनी रूप

पुरुषक बाधा स्वरूप नहि भए जीवनक ज्योति एवं मोक्षक साधन होइछ। पुरुष क्रूरता और स्त्री करुणा रूप अंतर्जगतक उच्चतम विकासक आधार थिक जाहि पर समस्त सदाचार स्थिर पाओल जाइछ। नारी सौंदर्य अवसाद, वेदना, इर्ष्या तथा जीवन ज्वाला सँ ध्वस्त पुरुषक हेतु शीतल छाह थिक जकरा पाबि पुरुषक नष्ट जीवन मे सार्थकता अबैछ।

नरेन्द्र सिंह—महादेवी ! कामिनीक कान्ति, षोड़शीक अनुपम शोभा, तथा सुकुमारिक मनोहरता पुरुष केँ अनायासहि खींचैछ तथा कर्त्तव्यानुकर्त्तव्यक पथ सं विमुख करैछ। रमणीक कारी नाग सन केश कलाप अकारण पुरुष केँ डसैछ तथा ओहि मध्य सुशोभित माँथक श्वेत रेखा विजुली जकाँ चकाचौंध करैछ।

महारानी—प्रभु ! नारी हृदय केँ एहि रूप मे बुझबाक दुर्बलता पुरुष मध्य भ्रमात्मक पाओल जाइछ। नारी सृष्टिक सृजन, पालन ओ संहारक मूल कारण थिक। नारीक अधर मे सुधा, आँचर मे पय और नैत्र मे विष पाओल जाइछ।

कमल सन कोमल नारी हृदय वज्र बनि वीरत्व केँ ग्रहण कए पतिक मृत्योपरान्त अग्निक आलिङ्गन करैछ तथा सुकमार शय्या पर पतिक अंकशायनी आपत्तिकाल मे कठोर बनि पति केँ रण मे सहर्ष प्रेषित की नहि करैछ महाराज ?

नरेन्द्रसिंह—नारी हृदय मे प्रेम, वियोग एवं बेदनाक अनन्य संयोग पाओल जाइछ। समस्त जगतक विश्रामावस्था मे ओ

जगैछ, वसंतक मादकता मे ओकरा ग्रीष्मक संतापक तथा चन्द्रमाक हँसी मे ओकरा व्याकुलताक अनुभव होइछ महादेवी !

महारानी:—नारीक प्रणयपूर्ण हृदये कें पुरुष देखैछ महाराज ! नारी-कर्त्तव्य तँ सदिखन पुरुषक नजरि सँ ओझल रहैछ। आत्म-मर्यादा ओ जगत-कल्याणक भावना सँ प्रेरित भए नारी-हृदय रण-चण्डी ओ दूर्गाक साक्षात् प्रतिमूर्त्ति बनैछ तथा रण-राग मे मत्त भए अपन पुत्रहुँ के युद्ध-भूमि मे प्रेषित करैछ नाथ !

नरेन्द्रसिंह:—धन्य मिथिलाक रमणी ! त्याग एवं सहनशीलताक प्रति-मूर्त्ति, ज्ञान ओ विज्ञान मे परिपूर्ण ! महारानी ! एहि भूमि मे अत्यन्त प्रारम्भे सँ एक विशेषता पाओल जाइछ जे एहि ठामक राजा-प्रजाक कोन कथा स्त्री मात्रो ज्ञान-विज्ञान, तप-त्याग एवं आत्मज्ञान मे परिपूर्ण पाओल जाइछ। निःसंदेह एहि देश कें पराधीनताक बंधन मे जकड़बाक भावना मानवक शक्तिक बाहरक वस्तु थिक।

तपोभूमि मिथिला पर संकट आएल अछि। युद्धक मेघ एहि देशक आकाश मध्य मड़राइत अछि। मातृभूमि एहि संकटावस्था मे बजाए रहलीह अछि। भगवती कङ्काली‌क प्यास शत्रुक शोणित सँ बुझेबाक हेतु शक्तिक आवश्यकता बुझि परैछ। पुरुष प्रकृति कें खींचि शक्ति प्राप्त करैछ तथा एहि सँ पुरुषार्थ सिद्ध मे प्रवृत्त होइछ महादेवी !

(महारानी श्रो आन-आन स्त्री लोकनि गबैछ तथा महा-राज कें चुमाउन करैछ ।)

सब मिलि श्री गणपति गुण गाउ ॥
सकल विघ्न विच्छेद खेद नहि सुख
सँ जनम गमाउ ॥
दुर्वादल फलफूल मुदित मन
संकरसुत कें चढ़ाउ ॥
सकल अभीष्ट सिद्धि करु गजमुख
सेवक पर जनु अलसाउ ॥
करु अर्पण मोदक देवक प्रिय शुचि
नैवेद्य से खाउ ॥
अनायास मन वांछित फल पायब
शंशय जनु लाउ ॥

(पटाक्षेप)

दृश्य पाँचम

(भौराक राज सभा : महाराज नरेन्द्र सिंह एवं आन-आन दरबारी लोकनि यथास्थान बैसल छथि ।)

चारण गबैछ :—

सुर पुर के राजा सङ्कहि भाजा मेरु
समाजा जाय परैँ ॥
तहाँ करत बड़ाई दुर्गा माई लेहु
बचाई अधिक डरैँ ॥
को गनति महीसा रंकाधीसा लावैँ
सीसा सुनि ठहरैँ ॥
धुली के दप्पेँ दिनकर झप्पै मेदनि
कम्पैँ को ठहरैँ ॥
बीजापुर बंका और सुरङ्का
जित नृप सङ्का योग भरैँ ॥
हुगली कलकत्ता नृपतनि सत्ता
तेजहि लत्ता फिरति फिरैँ ॥
दच्छिन नर नाहा तेजि सिलाहा
भेजहि बाहा को ठहरैँ ॥
ढक्का के रानी फिरहिँ देवानी ओ
मकमानी तृप हहरैँ ॥
डिल्ली सगबग्गी कासी भग्गी
बेतिया टग्गी को ठहरैँ ॥
दोनन सभके गति डरत सकल
अति मैथिल भूपति को बहरैँ ॥

जाफर खाँ—महाराजाधिराजक जय हो ! जय मिथिला ! जय मिथिलाक पराक्रमी योद्धा ! काम ओ मोहक सङ्ग युद्ध धर्म-युद्ध कहल जाइछ । सांसारिक वस्तु क्षणभंगुर होइछ मुदा धर्म रक्षार्थ उपार्जित पुण्य चिरस्थाई थिक । मिथिला ओ मैथिलीक मर्यादाक हेतु प्राण समर्पण केनिहार पुण्यात्मा सँ बढ़ि के आन भाग्यशाली भए सकैछ ?

हे मिथिला ! हे जन्म भूमि ! हे देश ! हे प्रेमधन !
जीवन पुष्प करैत छी अपन अहाँक चरण पर अर्पण ।

नरेन्द्र सिंह—पराक्रमी वीर वसुन्धराक उपभोग करैछ । बाजा-गाजा सँ युक्त रण-राग मे मत्त वीर केँ देखि देवासुर संग्रामक स्मरण होइछ ।

चारण गबैछ :—

राउत रजपूतेँ समैँ सपूतैँ लखि
परहूते सबल डरैँ ।
सुर बैस बुनैला बीर चनैला लसैँ
बघेला खड़ग धरैँ ॥
चौभान बिसेना सब्बर सेना
रायठौर दल बीर भरैँ ।
हाड़ा कछवाहा लाय सिलाहा हाहा
करि कैँ झूकि परैँ ॥
दब्बै अरिदम्भा जाति निकुम्भा औ
गन्हवरिआ सूर भला ।
सेँगर परिबाहा हैहरबाहा हैहयबन्सी
भीम भला ॥

गौतम बिजहरिआ ओ सरबरिआ
रघुबन्सी नरनाह कला।
गौड़ा बछगोती सुजस सुमोती
गहड़वार निज साजि दला॥
सिरमोरक कन्दा कौसिक चन्दा
बड़गैआँ करचोउलिया।
जो सगरबार सरदार सिपाही गोड़
अमैठी चौघरिया॥
तोमर गहनौता गुजर समेता
रानाबन्सी सिधौटिआ।
मौनस बिजहरिया नृप नगपुरिआ
बड़ महरौड़ी सतौड़िआ॥
करम्बार पम्मार कठेला कटहरिआ
सुरनेक सिपाही।
तँह लाल महा कवि जान महा छवि
अरि गन सीर मेँ असी बाही॥

(नेपथ्य मे गबैछ)

सभैँ सिपाह सलाम करि चढ्यो तुरङ्गम खास॥
किल्लाहूँ तेँ मिसि लगी कमला जी के पास॥
छेमङ्करिनि निहारि नभ भौ बिकसित मुख चन्द्र॥
लम्बोदर बिघ्नेस कहि बहराए नरइन्द्र॥
मच्छ पुच्छ के तिलक करि पैन्ह कुसुम के माल॥
कै प्रणाम बिघ्नेश केँ बहरानै भूपाल॥

(पटाक्षेप)

अङ्क तेसर

दृश्य एक

(पटनाक सुवेदारी)

(नवाब अलीवर्दीक संग जैनुद्दीन एवं राजा रामनारायण बैसल छथि।)

चरक :—आलिपनाह ! नरेन्द्र सिंह के लश्कर का सिपाही गजब ढाहता है। टिड्डी दल के मानिन्द वे नवाब आली के फौज पर छा गये हैं जिससे मोकम्मल फौज घबड़ा गयी है।

तुरङ्गा सुरङ्गा लसैँ मीन रङ्गा।
पिलङ्गा सबैँ सोँ महा नील रङ्गा॥
जरद्दा मुसुकी समुन्दा छबीला।
हराबोज सबजा ओ लीला ओ तीला॥
सुरक्खाऽबलक्खा मानो वायु सक्खा।
सु उच्चैस्स्रबा को दले दर्प्प देखा॥

मालूम नहीं जङ्ग किसके हाथ है।

रामनारायण :—खुदाहाफीज ! नवाबेआली ! नवाबआली का दिलेर जवान टिड्डी के दल से नहीं घबड़ा सकता। हमारे तोप ओ बारूद के सामने हवा के मिश्ल वे उड़ जायेंगे। हमारे जवानों ने बड़े-बड़े जङ्ग जीते हैं और नवाबआली के शान में चार चाँद लगा दी है। हमारे जवान की बहादुरी को हिन्दोस्ताँ में कौन नहीं जानता ?

अलीवर्दी :—राजा रामनारायण ! मैं जानता हूँ कि तुम नवाबआली का वफादार हो और तुमने नवाब के सल्तनत बढ़ाने में

काफी मदद की है। दोस्ती और लड़ाई हवा की रूख देखकर की जाती है। मालूम पड़ता है कि तिरहुत का जङ्ग आपसी वैर का नतीजा है जो तुमने ओसुल पर मर मिटने वाले एक दिलेर शेर के साथ मोल ली है।

(एक सिपाहीक अभिवादन करैत प्रवेश)

सिपाही :—नवाबआली ! कसूर माफ हो। नवाबआली के फौज की हार हो रही है। सिपाही मैदान में हिम्मत हार चुके हैं। दुश्मन की होसला दरिया की बाढ़ के पानी के मानिन्द बढ़ रही है।

उठाई सलाबत ने घोड़े के बागें।
भए सिंघ उमराओ आड़े हो आगें॥
बहादुर दोऊ को कहाँ ल्यो बड़ाई।
पड़ी कर्ण पारथ की ऐसी लड़ाई॥
निकलि खाप तें खूब तेगा चली है।
महा घन घटा दामिनी जो भयी है॥
जखम खाय पीछे भए हैं नचारा।
पकड़ि कैं सलावति को नीचे दै मारा॥

अलीवर्दी :—सलावत की मौत ! नवाब अलीवर्दी की हार ! यह जङ्ग बगावत का न होकर अदमतशद्द ओ ओशुल का जङ्ग है। जैनुद्दीन हौदा कसाया जाय और तिरहुत की फौरन रवानगी हो।

(पटाक्षेप)

दृश्य दू

(हरिनाक मैदान : युद्ध भूमि । नरेन्द्र सिंह, गोकुलनाथ उपाध्याय, जाफर खाँ, मित्रजीत सिंह, उमराउ सिंह आदि बैसल छथि ।)

चारण गबैछ :—

बड़ी-बड़ी बनात की कनात जाहि राउटी ।
तहाँ तहाँ जमाहिरे जड़ाउ लाल तेँ जटी ॥
लगे लगे हजार हेम तार कोर सो भरैं ।
कहू कहू बितान आसमान ल्यो रहै खरैं ॥
कहुँ अनेक रूप की बिचित्र पालकी पड़ी ।
कहुँ हजार के सिलाह और लालकी धरी ॥
कहुँ तुरङ्ग औ मतङ्ग सोँ धरे हजार हीँ ।
कहुँ कमान और बेस बान बेशुमार हीँ ॥
कहुँ अनेक दुन्दुभी मृदंग रंग रंग के ।
कहुँ सिपाह तुङ्गदार जेतवार जङ्ग के ॥

नरेन्द्र सिंह :—बलानक कलकल ध्वनि मे अमर संगीतक आभास पाओल जाइछ । पुराण प्रसिद्ध नदी माँछरूपी चंचल नेत्र सँ मातृभूमिक रक्षार्थ वीरक बलिदान केँ निहारैछ एवं कामिनी सदृश जलरूपी अवकुन्ठन मे प्रक्षिप्त भए जाइछ ।

शत्रुक दर्प केँ चूर्ण केनिहारि बलानक ई घाट आइ सँ कन्दर्पी घाट नामे जानल जाएत जे मिथिलाक हल्दीघाटी होएत तथा मिथिलाक भावी संतान केँ आत्म-सम्मान एवं मातृभूमिक रक्षार्थ शोणित मे उष्णता, भाव मे उमंग, एवं नस मे उत्साह आनत ।

मातृभूमिक हेतु अपन प्राण अर्पण केनिहार वीरक यशक अमर संगीत एहि देशक भावी संतान केँ बलानक कल कल ध्वनि मे भेटत जाहि सँ त्याग एवं बलिदानक भावना साकार रूपेँ सतत् समक्ष रहत।

व्यक्तिक होइछ धर्म तप करुणा ओ त्याग।
होइछ व्यक्तिक शोभा विनय जाधरि रहैछ अनुराग॥
होइछ अपहरण न्याय ओ सत्यक जखन।
विच्छिन्न करब शत्रु केँ होइछ पुण्य तखन॥

चरक :—महाराजाधिराजक जय हो!

सबे फिरै मैदान छाड़ि फौजदार भागि गौ।
भयो फतेह भूप को सुकीर्त्ति बम्ब बाजि गौ॥

चारण गबैछ :—

जो पीछै लगे हैँ सभैँ राओ रानै।
लुटै तोसखानै नगारे निसानै॥
कहूँ पालकी लालकी कोटि हीरा।
लुटै तोसदानैँ भरैँ खास बीरा॥
ओ तम्बू कनातैँ लुटैँ ऊँट गाड़ी॥
लुटे है कहूँ केहु काहू पिछाड़ी॥
बरच्छी धमाका लुटे साँगि नेजा।
गथे हैँ कहूँ केहु काहू करेजा॥
कहूँ बाजि हाथी लुटै बैस धाई।
महाराज जू को फिरी है दोहाई॥

(नवाब अलीवर्दी, जैनुद्दीन एवं रामनारायणक प्रवेश तथा नरेन्द्र सिंह अभिवादन करैछ)

अलीवर्दी :—शावाश राजा नरेन्द्र सिंह! शावाश! मुवारक हो। मैं तुम्हारी बहादुरी पर खुश हूँ और जंग मे तुम्हारी कामयावी पर वधाई देता हूँ।

नरेन्द्र सिंह :—कसूर माफ हो नवाबआली। मेरा जंग मुर्शिदाबाद के नवाब अलीवर्दी के खिलाफ न होकर पटने के सुवेदार के जोर वो जुल्म के खिलाफ था आलीपनाह! मैं अपने को नवाब अलीवर्दी के मातहत में हमेशा मानता हूँ और नवाब से मेरा गुजारिश है कि हमारी रियाया के तकलीफ को दूर कर दें।

अलीवर्दी :—राजा नरेन्द्र सिंह! मुझे फक्र है कि मुर्शीदाबाद के नवाब अलीवर्दी के सल्तनत में एक ऐसा भी मुल्क है जहाँ के मोकम्मल रियाया तालिमयाफतह और अदमतशद्दुद हैं। यहाँ के पैदावार जम्मीन, लहराती कुई दरिया और जमा-मर्द रियाया अलीवर्दी के सल्तनत में जन्नत और दिलेर राजा शर के ताज में कोहिनूर के मानिन्द जेवा है। मुझे मालूम है तुम्हारी रियाया मजहबे फर्क को न मानकर ईमानदारी, इन्साफ और सादगी को अपना मजहव मानती हैं।

(राजा रामनारायण से)

रामनारायण! तुम्हें शर्मिन्दा होना चाहिये। ओशुल पर मर मिटनेवाली रियाया जोड़ ओ जुल्म के दबाव से वश में नहीं की जा सकती। दिलरूपी दरिया को मोहब्बत के पूल से पार की जाती है।

(नरेन्द्र सिंह से)

राजा नरेन्द्र सिंह! तुम मेरे मातहत में रहते हुए भी मेरा दोस्त हो और मैं सुबे बिहार के पूर्बी और उत्तरी हिस्सा भी तुम्हारी जमींदारी में मिलता हूँ।

(पटाक्षेप)

दृश्य तीन

(भौरा गढ़ : अन्तःपुर)

महारानी गबैछ :

कुसुमित वन घन अमित पलाशे।
बिरहिन मन नहि जीवनक आशे॥
कि कहब किछु नहि फुरइछ आजे।
प्रिय मधुपुर छथि कुबड़ि समाजे॥
निज कृत सुख दुख जनकर भोगे।
दुखहु समय लिखि पढ़बथि योगे॥
परवश हृदय सभय कलि मंदा।
सुकृति समयगत कह कवि चन्दा॥

(कंचुकीक अभिवादन करैत प्रवेश)

कंचुकी—महारानी ! महारानीक जय हो ! शत्रुक संहार ! मिथिलाक विजय ! खण्डवला वंशोद्भव महाराज नरेन्द्र सिंहक विजुलीसन चमकैत तेज तरुआरि सँ काटल कन्दर्पी घाटक मैदान शत्रु क मुण्ड सँ भरि गेल। तीव्र गति सँ उछलैत माँछ रूपी चंचल नेत्र स युक्त बलान नदी रामनारायणक सेनाक मुण्ड रूपी बाँध स अवरोधक कारणे गंगाक आङ्गिन स वंचित भए गेलीह।

रन फतेह भौ भूप को फौजदार गौ भागि।
चौगुन ह्वै तिरहूति को कीर्त्ति उठी है जागि॥
छाड़्यो हाकिम जानि कै फक्क भिखारी एक।
राख लियौ जगदम्ब ने महाराज के टेक॥

महारनी :—कंचुकी ! ग्रीष्मक संताप सँ संतप्त पृथ्वी वर्षाक जल पाबि अविराम सौदर्य केँ धारण करैछ, मेघक कारी-कारी घटा केँ देखि मयूर आनन्द विभोर भए नचैछ तथा चातकक रट सँ मनुष्य मात्रक चित्त उत्क्षिप्त होइछ ।

भगवती पूजाक तैयारी हो । ब्राह्मण भोजन, दान-धर्म आदिक व्यवस्था कएल जाए तथा सम्पूर्ण नगर दीप-मालिका सँ सजाएल जाय ।

(नेपथ्य मे गाओल जाइछ)

जय जय हे नव जलधर सुन्दर
तुअ कर जग कल्याण ।
तुअ बिनु यज्ञ विज्ञमन कुन्ठित
सत्य बचन भगवान ॥
जय जय दीनन दायक जगती
गति दोसर नहि जान ॥
सुक्ति वदन घन मुक्ति प्रदाता
अवसर सकल महान ॥
तुअ परताप वीर-रस पूरित
अशनि अस्त्र प्रधान ॥
शंकर काम रूपगुण मंडित
अतनु शतनु मतिवान ॥
कनक कदलि जगलोचन सुखकर
घन घनसार प्रमान ॥
जय जय देव देव सुरवन्दित
भनथि सुकवि चान ॥

॥ समाप्त ॥

लेखकक अन्य कृत ग्रंथ

१. महाकवि विद्यापति नाटक—विद्यापतिक जीवन पर आधारित सरस भाषा, सुललित भाव एवं तथ्यपूर्ण कथनोपकथनक अपूर्व मैथिलीक नाटक मूल्य २) टाका मात्र।

२. शास्त्रार्थ नाटक—शंकराचार्य, मण्डनमिश्र एवं भारतीक मध्य भेल शास्त्रार्थ पर आधारित दार्शनिक तथ्य केँ सरस ओ मनोरञ्जक रूप मे प्रतिपादित मैथिलीक नाटक। मूल्य १) टाका ५० पैसा मात्र।

३. एकादशी—संहिता, जातक एवं कथासरित्सागर सँ संग्रहित एगारह गोट शिक्षा-प्रद ओ अत्यन्त रोचक कथाक मैथिली मे संग्रह। मूल्य एक टाका पचास पैसा मात्र।

४. विद्याधर-कथा—कथासरित्सागर मध्य वर्णित मूल कथा केँ सरस, सुललित, मनोरञ्जक एवं प्रभावोत्पादक रूप मे परिवर्त्तित ओ परिमार्जित मैथिली मे अत्यन्त रोचक कथा। मूल्य २) टाका मात्र।

५. उर्वशी (मैथिली), मूल्य ३) टाका।

६. धर्म व्याध-कथा (मैथिली), मूल्य १ टाका।

७. कालचक्र की उत्पत्ति एवं उत्पन्न क्रमों की संक्षिप्त व्याख्या (हिन्दी), मूल्य ६) रुपये।

८. मैथिली साहित्यक आदिकाल (मैथिली), मूल्य ७ टाका ५० पैसा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

ग्रंथालय
टावर चौक, दरभंगा

शिक्षा सदन, सुपौल
सहरसा

एवं

श्री अमरनाथ झा

द्वारा—बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना-१